IJAER/January-February 2018/Volume-6/Issue-4/Article No-1/ 1-3 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

# कथाकार उषा प्रियम्वदा के कथा साहित्य में परम्परा और आधुनिकता

**SUNITA**
MA, Department of Hindi
Kurukshetra University
Kurukshetra

**सार–**

आधुनिक कथा लेखिकाओं में सुश्री उषा प्रियम्वदा एक ऐसा सुपरिचित हस्ताक्षर है जिनकी कथाओं में भारतीय जनमानस की जीवन शली के बदलते परिदृश्य का सम्पूर्ण इतिहास निहित है। एक ओर मानवीय जीवन की यह धारा भारतीय सांस्कृतिक चेतना की परिधि में आवेष्टित है तो दूसरी ओर पाश्चात्य जीवन की मुक्त जीवन शैली भी विकास चेतना की ओर उन्मुख है। प्रथम के प्रति उसकी वर्षों पुरानी आस्था और विश्वास का भाव है; तो दूसरे के प्रति जीवन के लिए आवश्यक वस्तुओं के संग्रह और भौतिक आनन्द की उपलब्धि का आग्रह। आज का व्यक्ति नए सन्दर्भों में अपने नए अस्तित्व और अस्मिता के अन्वेषण में लगा है। नारी हो अथवा पुरुष – आज के युग में दोनों ही अपने अस्तित्व और महत्व के लिए सजग और सतर्क हैं। अतः आधुनिक मानव एक द्वन्द्व के बीच जी रहा है – यह द्वन्द्व है उसके अर्न्तमन में परम्परा के प्रति व्यामोह का और नए जीवन की तलाश में भटकते मन का। मैंने इसी दृष्टि से कथा लेखिका सुश्री उषा प्रियम्वदा के कथा साहित्य में आधुनिकता ओर परम्परा के मध्य पिसते भारतीय जन के अन्तर्द्वन्द्व को रेखांकित करने का यत्न किया है।

**प्रस्तावना–**

उषा प्रियंवदा हिन्दी कथा जगत् में विशिष्ट कथाकार के रूप में जानी जाती है। 1961 में इनका पहला कहानी–संग्रह 'फिर बसंत आया' पाठक जगत् के सामने आया और उसके बाद उनकी कइ कहानी एवं उपन्यास पाठक जगत् को मिलते गए। उषा प्रियंवदा की इन सभी कथाओं में यथार्थ युगबोध निहित है। बदलते आधुनिक भारतीय समाज में पारिवारिक रिश्तों में बदलाव, बेकारी, अकेलापन, उदासी, नारी अस्मिता जैसी कई महत्त्वपूर्ण विषय उनकी कथाओं में अभिव्यक्त हई है। वैसे तो उनकी कहानियाँ विभिन्न प्रकार के मुद्दों को लेकर होते है लेकिन सभी कहानियों में कुछेक तत्व समान रूप से दिखायी पड़ते है। वे है अकेलापन, उदासी, निराशा इत्यादि जो कि आज के आधुनिक भौतिकवादि जगत् की देन है। लोग आज अपने जीवन में भौतिक सखों की तलाश में सबसे ज्यादा भटकते है, साथ में यह भी कह सकते हैं कि वे अन्य सुखों की तलाश में भी भटकते रहते है जिसके कारण वे अपने आस–पास की जिन्दगी में जो कुछ भी है या जो कोई भी है उनसे दूर हो जाते है या कट जाते है जिससे साथ वाला अकेला हा जाता है। अतः उषा जी ने अपनी कहानियों में जो कुछ भी व्यक्त किया है वह हमारे सामने कई सवाल विचार के लिए छोड़ जाती है। इसलिए उनकी कहानी इस दौर में ज्यादा महत्त्वपूर्ण हो जाती है। उनके कहानी लिखने की एक विशेष कला है कि वे अपने मुद्दों को सीधे–सीधे बयान नहीं करतीं बल्कि एक विशेष वातावरण तैयार करती हैं जिसमें पात्र चढ़ता–उतरता रहता है। उनके मानसिक उतार–चढ़ाव, उनके व्यवहार, उनकी बात–चीत आदि से ही सारी स्थिति स्पष्ट हो जाती है। उनकी कहानियों की विशेषता की चर्चा करते विजयमोहन सिंह का कहना है कि उनकी कहानी एक विशेष प्रकार का मानसिक तथा परिवेशगत वातावरण रचती है, जिसमें उदासी, अकेलापन और बाहर या दूसरे से न जुड़ पाने की एक अभिशप्त स्थिति अंकित की जाती है। वह प्रायः उच्च शिक्षा प्राप्त कामकाजी आधुनिक स्त्री की नियति बन जाती है। खासतौर पर एक ऐसी स्त्री जो स्वतन्त्र, निजी और लीक से तनिक हटकर जीना चाहती है। यद्यपि उनकी सर्वाधिक चर्चित कहानी वापसी एक भिन्न प्रकार की कहानी है। उसमें एक सेवानिवृत व्यक्ति का अभिशप्त रूप व्यक्त किया गया है। वह वापस उसी दुनिया में (परिवार) नहीं जा सकता जहाँ वह जाना चाहता है, या जा सकता है। आधुनिक पारिवारिक संरचना की यह अनिवार्य नियति है।

उषा प्रियंवदा की कहानियों में जो निहित युगबोध है उसमें सबसे अधिक स्वर जो उभरकर आता है वह है अकेलापन और उदासी। आज इस भाग–दौड़ की जिन्दगी में व्यक्ति चाहे कितना भी अपने मित्र, परिचित, प्रेमी या परिवार के साथ रह ले लेकिन कही–न–कही से कभी–न–कभी वह अपने–आप को अकेला महसूस करता है उदास रहने लगता है और अकेलेपन की ओर अग्रसर होता है। क्योंकि उसके मन में वर्तमान परिस्थिति में जो कुछ भी घटित होता है उसे वह स्वीकार नहीं कर पाता। उसके प्रतिकूल यदि कोई बात हो जाए तो वह जैसे उससे भागता फिरता है। साथ ही व्यक्तिगत जीवन में हर प्रकार की सुख–सुविधा की चाह की भाग–दौड़ में वह या तो सबको पीछे छोड़ आता है और फिर अकेला हो जाता है या साथ वाले को अकेला बना देता है। उषा प्रियंवदा की कुछ ऐसी ही कहानी है जिसमें आज के युग की सबसे बड़ी चुनौति अकेलेपन की समस्या जो या तो परिस्थितियों ने खड़ी की है या व्यक्ति ने स्वयं चाहा है। इस समस्या को उनकी कुछ प्रमुख कहानियों में देखा जा सकता है जो हे वापसी, सम्बन्ध, नींद, जिन्दगी और गुलाब के फूल, स्वीकृति। इन सभी कहानियों के स्त्री या पुरूष पात्र किसी–न–किसी कारण से अकेले नजर आते हैं। इन सभी कहानियों में पात्र अपने अकेलेपन से छुटकारा भी पाने की कोशिश करते है तो कही वे अकेलेपन में ही जीना चाहते है। सभी कहानियों में परिवेश भिन्न है, परिस्थिति भिन्न है परन्तु समस्या एक ही।

प्रख्यात लेखिका सुश्री उषा प्रियम्वदा भारतीय संस्कृति की विशद् छाया के तले पली बढ़ी भारतीय नारी है। उनके संस्कारों में भारतीयता की गंध आती है परन्तु उनका चिंतन और जीवन शैली आधुनिकता बोध की सौंदर्य चेतना से संतृप्त है। वे नारी की जड़ता और प्रतिबंधित जीवन शैली की समर्थक नहीं है। वे नारी के मन में उठे स्वप्न और संकल्पना को साकार स्वरूप प्रदान करने की समर्थक है। भारतीयता परम्परा की पोषक जीवन–शैली है, जिसमें नारी की स्वतंत्र सोच, जीवन–शैली और निर्णय की स्वतंत्रता नहीं है। वह पुरुष की अर्धांगिनी है। सहधर्मिणी है – परन्तु स्वतन्त्र निर्णय लेने की अधिकारिणी नहीं है। परम्परा और मर्यादा के पिंजरे में बंद नारी का जीवन ही 'परम्परा' के नाम पर श्रंखला की कड़ी है। इस 'परम्परा' की श्रंखलाओं का विखण्डन ही आधुनिकता का प्रतीक है।

कथा लेखिका उषा प्रियम्वदा के साथी उपन्यासों और कथा–साहित्य में परम्परा और आधुनिकता का यह द्वन्द्व सर्वत्र परिलक्षित होता है। ''रूकोगी नहीं राधिका'', ''पचपन खम्भे लाल दीवारें'', ''शेष–यात्रा'', ''अन्वंशी'' और ''कबीरा भयो उदास'' के अतिरिक्त उनकी कहानियों में भी उनके व्यक्तित्व की मौलिकता की छाप परिलक्षित होती ह।

कथा लेखिका उषा प्रियम्वदा मूलतः नारी है। अतः उन्होंने नारी जीवन की बाह्य एवं अन्तः जीवन स्थितियों और मनोविज्ञान का उतना गहन अध्ययन किया है कि नारी मन का कोई भी कोना उनसे अछूता नहीं रहा है। प्राचीन सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति उसकी आस्था मन से नहीं हैं, परिवेश और परिस्थिति की अनिवार्यता के कारण है, 'अशिक्षा' भी इसका मूल कारण परिवार की मर्यादा और परम्परा का खण्डन उसके लिए असम्भव है। परन्तु आधुनिक युग की शिक्षित नारी परम्परा के रंग में रंगा कोई परिधान मात्र नहीं है; वह नयी परिस्थिति और विकास के नव्य आलोक में स्वयं की स्थिति, अस्मिता और अस्तित्व की नयी पहचान है। नारी का यह आधुनिकता बोध है– ''रूकोगी नहीं राधिका'' उपन्यास में राधिका से विद्या का यही प्रश्न है कि तुम नए और पुराने में समन्वय स्थापित करो – नयी और पुरानी पीढ़ी का यह संघर्ष ही परम्परा क प्रति विद्रोह है ''पचपन खम्भे लाल दीवारें'' में अनिश्चित भविष्य की ओर निहारती नारी अन्ततः अपनी नियती के समक्ष घुटने टेक देती है। घर का दायित्व निभाने वाली नारी ही अन्ततः आयु और समय के धरातल पर स्वयं को नितान्त अकेला पाती है। उसके लिए काटेज और उसकी लाल दीवारें तथा कमरे के जंगल में से रोशनी में दिखायी देते पचपन खम्भे ही जिन्दगी का सच बन जाते हैं।

''शेष–यात्रा'' में अनिश्चित गन्तव्य की ओर बढ़ते नारी के चरण उसे नए परिवेश में ढाल कर नया अस्तित्व प्रदान करते हैं। इसी भांति अर्न्तवंशी में बनारस की बाना जा भारतीय संस्कृति और भारतीय लिबास में लिपटी गुड़िया सी लगती है, वही विदेश में जाकर घुटनों तक की स्कर्ट और टॉप पहन कर विदेशी मेम बन जाती है। उसका पति जो उसके ऊपर प्राण न्यौछावर करता है, उसे पढ़ाता–लिखाता है– क्लब और पार्टियों में ले जाता है – एक षड़यन्त्र में फंसकर उसका पति पराया हो जाता है। सम्बन्धों की पवित्रता और प्रगाढ़ता क्षण भर में ही अपावन और विकृत हो जाती है और बाना

एक नए व्यक्ति के साथ चली जाती है। अर्श आधारित सम्बन्धों की डोर कितनी नाजुक व कमजोर होती है – इस उपन्यास में जीवन के सम्पूर्ण परिदृश्य को प्रस्तुत करता है।

सत्य तो यह है कि आधुनिक प्रगति चेतना के युग में व्यक्ति इतनी स्वार्थपरता और नितान्त वैयक्तिता से घिर गया है कि सम्बन्धों की प्रगाढ़ता और पहचान खो सी गई है। परम्परा व्यक्ति को उसके भूत से जोड़ती है, परन्तु आधुनिकता उसे जीवन की भौतिकतावादी नयी भूमि में रोपने का यत्न करती है। परम्परा जीवन का छांव है। जिसमें बैठकर व्यक्ति अभाव में भी पूर्णता और सम्पन्नता का अनुभव करता है। आधुनिकता क्षणिक अस्तित्व और उपलब्धि का बोध है जिसमें प्राप्ति के बाद भी अभाव का संकट विद्यमान रहता है।

**निष्कर्ष–**

सुश्री उषा प्रियम्वदा जी ने अपने उपन्यासों में भारतीय संस्कृति के आलोक में व्यक्ति की जीवन–शैली को इस भांति विन्यस्त किया है कि व्यक्ति सब कुछ बिसारकर भी उसी जीवन शैली में जीने का आकांक्षी रहता है। आधुनिक पाश्चात्य सभ्यता के आलोक में 'अर्श' और 'भ्रम' की महत्ता बढ़ने के साथ–साथ नारी और पुरूष के सम्बन्धों में भी भारी परिवर्तन आया है। परिवारों की सीमाएं टूट रही हैं। पति और पत्नी के पवित्र सम्बन्ध दरक रहे हैं। गर्ल फ्रेंड और ब्वॉय फ्रेंड की नई सभ्यता जन्म ले रही है। प्रेम–विवाह, विवाह–पूर्व सम्बन्ध, स्वतन्त्र–स्वैच्छिक काम सम्बन्ध, नारी के स्वतन्त्र अस्तित्व की तलाश, नाइट क्लब, कारपोरेट संस्कृति के प्रति बढ़ती चाह ने नारी को सीता और सावित्री की पून्यनीया भाव–निष्ठा से इतर बाजारू औरत के पद पर आसीन कर दिया है। इसी प्रकार परम्परा के गिरते स्तम्भों के मध्य आधुनिकता के नए शिखरों की निर्माण आधुनिक साहित्यकार के लिए एक नया विषय भी है और चुनौती भी।

## ग्रन्थ सूची

1. बीसवी शताब्दी का हिन्दी साहित्य – विजयमोहन सिंह, राजकमल प्रकाशन, 2005, नई दिल्ली, पृ. सं 191.
2. वापसी और अकेली कहानी में व्यक्त अकेलापन – मधुछन्दा चक्रवर्ती, मुक्त कथन, अंक 13, 2009
3. सम्बन्ध(कितना बड़ा झूठ)– उषा प्रियंवदा, राजकमल प्रकाशन, 2010, पृ.सं 13.
4. पचासोत्तरी हिन्दी कहानी– तीसरे आदमी की अवधारणा महिला कहानीकारों के संदर्भ में, डॉ देवेच्छा, आत्माराम एण्ड सन्स, पृ.सं 68–69.
5. उषा प्रियम्वदा का सम्पूर्ण कथा साहित्य।